चर्चा पत्र दिसम्बर, 2016

द्वितीय वर्ष

संकुल स्रात केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु

अंक–7

माताओं का उन्मुखीकरण

Digital India
Power To Empower

छत्तीसगढ़ डिजिटल

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन
रायपुर, छ.ग.

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

आपसे अपनी बात

धीरे-धीरे संकुल स्त्रोत केन्द्रों में अकादमिक चर्चाओं का दौर शुरू होने की खबरें आ रही है | विभिन्न व्हाट्सयएप्प समूहों व्दारा अपने अपने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सदस्यों के साथ कक्षागत परिस्थितियों में सुधार एवं सुझाव साझा किए जा रहे हैं | डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के माध्यम से जिलों में सीखने-सिखाने का माहौल बन रहा है | आशा ही कि माह जनवरी में आयोजित होने वाले आगामी अकादमिक निरीक्षण के दौर तक हम अपने बच्चों में अपेक्षित दक्षताएं लाने में सफल हो सकेंगे |

प्रथम एवं द्वितीय अकादमिक निरीक्षण के बीच शिक्षकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप क्षमता विकास के लिए जिलों ने आवश्यक प्रयास किए हैं | लेकिन यहाँ एक बात ध्यान रखने की है | शिक्षक या संकुल समन्वयक जब अपने क्षमता विकास के लिए स्त्रोत संसाधन केंद्र या प्रशिक्षण संस्थाओं में जाएं तो इसका मतलब होता है कि वे अपने नियमित काम को छोड़कर अपने काम की प्रभाविता को बढाने जाते हैं | अपनी आरी की धार समय-समय पर बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है | पर क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि क्या आपके आरी की धार इन कार्यक्रमों के माध्यम से बढ़ पा रही है ? क्या इन कार्यक्रमों में आपकी आवश्यकताओं के अनुसार आपको सुधार के लिए अवसर एवं अनुभव मिल पा रहे हैं ?

यदि नहीं, तो फिर यह कहना छोड़ दें कि इस कार्यक्रम से बहुत फायदा हुआ, हमें बहुत सी नवीन जानकारियाँ मिली और हम अपनी कक्षा को और बेहतर तरीकों से पढ़ा पाएंगे | आपका यह व्यवहार हमारे शिक्षक प्रशिक्षणों की डिजाइन को सुधारने में कोई मदद नहीं करेगा बल्कि उलट नुकसान ही होगा | यदि आपको वास्तव में सुधार में सहयोग करना है तो आपको सही-सही फीडबैक देना होगा और हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के लिए ठोस सुझाव देने होंगे | यदि हमारे शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार नहीं होगा तो हमारी कक्षाओं में भी कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देगा |

चर्चा पत्रों के माध्यम से हम पिछले कुछ महीनों से यह प्रयास कर रहे हैं कि सरल आम बोलचाल की भाषा में हम आपको कुछ ऐसे उपाय दे सकें जिनके माध्यम से आप अपनी कक्षाओं में कुछ सुधार कर सकें | यदि आपने अपने संकुल में इमानदारी से इन मुद्दों पर चर्चा कराई होगी और बैठक के बाद मानीटरिंग की होगी तो शालाओं में बहुत से छोटे-छोटे परिवर्तन आपको दिखाई देने लगे होंगे और इनका प्रभाव बच्चों की उपलब्धि पर भी पड रहा होगा | चाहे वो प्रिंट-रिच वातावरण हो, वाल मैगजीन, समूह शिक्षण, आकलन के सरल तरीके, कक्षा में रोचक कहानियां सुनाना, मुखौटों का उपयोग, कागज़ के खिलौने बनाकर उनका उपयोग, माताओं का उन्मुखीकरण, प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी जैसे कई छोटे-छोटे नवाचार आपके आसपास दिखाई देने लगे होंगे |

इस बार हमने आपसे सीधे जुड़ने के लिए व्हाट्सएप्प का एक समूह बना लिया है और जिलों को भी अपने अपने जिले में संकुल स्त्रोत समन्वयकों का एक समूह बनाते हुए जिले के शिक्षक प्रशिक्षण प्रभारियों को उनका एडमिन बनाने के निर्देश दिए हैं | इस प्रकार जिलों में किए जा रहे नवाचारों, अच्छे कार्यों को एक दूसरे से साझा किया जा सकेगा | पर इन सबका फायदा तभी होगा जब इनमे अकादमिक चर्चाएँ ही हो | वरना यह सुप्रभात और शुभ रात्रि के साथ केवल मनोरंजन का एक साधन मात्र रह जाएगा | इस माह आपसे अपने अपने विकासखंडों में अकादमिक मुद्दों पर चर्चाए करवाए जाने एवं गणित सप्ताह के आयोजन पर फोकस किए जाने का अनुरोध है |

आप सभी के सक्रिय सहयोग से और अकादमिक मुद्दों पर लगातार हो रही चर्चाओं एवं गतिविधियों से निश्चित ही यहाँ का मौसम बदलने लगा है | बच्चों में अपेक्षित दक्षताएं आने लगी हैं और कक्षाओं में सुधार दिखाई देने लगा है |

"बातें बहुत हो रही हैं,मेरे-तुम्हारे विषय में, जो रास्ते में खड़ा था पर्वत पिघलने लगा है |"

एजेंडा # 1: ठण्ड का मजा-

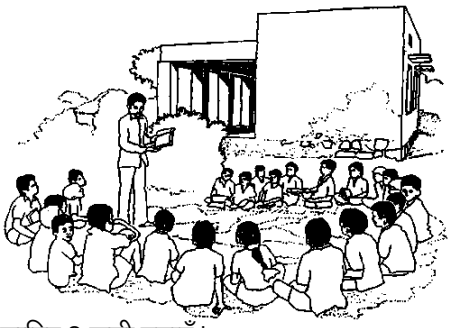

माह दिसंबर में अच्छी ठंड पर रही होगी | याद करें ठंड के दिनों में धूप में बैठकर हमारे शिक्षक प्रकृति की गोद में बैठकर पढ़ाते थे तो कितना मजा आता था | कोशिश करें कि हम भी अपने बच्चों को ऐसा मौका दें और उन्हें पढाई के साथ-साथ विटामिन भी लेने का अवसर दें | धुप में बैठने से कौन सा विटामिन मिलता है ? इस विटामिन से क्या फायदा होता है ? यह क्यों आवश्यक हैं ? स्वयं पता करें और बच्चों को भी बताएं |

माह दिसंबर-जनवरी में बाहर बिठाकर कैसे और किन मुद्दों पर बच्चों के साथ चर्चा करनी चाहिए ? सूची बनाएँ |

एजेंडा # 2: पलायन पर क्रियात्मक अनुसन्धान -

माह दिसंबर में कुछ जगहों से बच्चे लंबी अवधि के लिए गायब होना शुरू हो जाते हैं | यदि आपको लगता है कि आपके संकुल की कुछ शालाओं से पलायन शुरू होने वाला है और ऐसा अमूमन हर वर्ष होता है तो इस समस्या को दूर करने एक एक्शन रिसर्च कर सकते हैं | इस हेतु निम्न मुद्दों पर चर्चा करें –

लक्ष्य समूह- ऐसे कौन कौन सी शालाएं हैं जहां से बच्चे लंबी अवधि के लिए गायब हो जाते हैं ? ऐसे कौन कौन से बच्चे हैं ? लंबी अवधि तक गायब होने की अवधि प्रायः किन माहों में होती है ? ये कब लौटते हैं ? ये कहाँ और क्यों जाते हैं ?

कारण जानने- ऐसे बच्चों एवं उनके परिवारों से पता करें कि वे कहाँ जाते हैं, क्यों जाते हैं और उस अवधि में बच्चे क्या करते हैं ? उनकी पढाई का क्या होता है ? वे कब वापस आते हैं ? क्या वे यहीं रहकर कुछ कामकाज कर सकते हैं ? क्या उन्हें यहाँ कुछ काम नहीं मिलता?

समस्या निदान हेतु उपाय समझने- क्या उनके परिवार के कुछ सदस्य यही रहते हैं ? क्या वे अपने बच्चों को उनकी देखरेख में छोड़ सकते हैं ? क्या समुदाय में कुछ बुजुर्ग लोगों की देखरेख में बच्चों को एक साथ रखा जा सकता है ? ऐसा क्या करें कि पलायन न करना पड़े ? शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी एवं ऐसे क्षेत्रों में उन्हें लागू किए जाने पर सुधार की संभावनाएं ? क्या पालकों को मालूम है कि ऐसा करके वे बच्चों का कितना नुकसान कर रहे हैं ? क्या उन्हें नियमित कक्षा में पढाई का महत्व मालूम है ? क्या उनके बीच कोई ऐसा है जो उन्हें पढ़ा सकता है ? जिनका जाना मजबूरी हो उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कैसे करेंगे ? जाने वाले बड़े बच्चे अपने से छोटे बच्चों को कैसे सीखने में सहयोग कर सकते हैं ?

किनके साथ काम करना है – अब अपनी शाला से ऐसे बच्चों की सूची बना लें जिनके साथ काम कर उन्हें लंबी अवधि में छुट्टी पर जाने से रोकना है |

पुराने ट्रेंड्स देखें – देखें कि कौन-कौन से परिवार, किस अवधि में लंबी अवधि के लिए जाते हैं ? कितनी संख्या में बच्चों की संख्या में कमी आती है ?

कैसे काम करेंगे/ कुछ उपाय जो अपनाएंगे – स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप क्या करें जिससे आपका उद्देश्य पूरा हो / एक उपाय के फेल होने पर कौन से अन्य उपाय अपनाएं / लक्ष्य समूह, पालकों, समुदाय के साथ समूह चर्चा कर आपसी सहमति से कुछ उपाय लागू करने का प्रयास करें |

कितना सुधार हुआ- देखे कि आपके प्रयास से पलायन में कितनी कमी आई है और कितने लोग नियमित शाला आने लगे हैं ? किन उपायों से फायदा हुआ ? इस ट्रेंड को कैसे बनाए रखा जा सकता है और बच्चों के अनुपस्थिति को कैसे न्यून किया जा सकता है ?

अपने अनुभव लिख डालें – इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हुए अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर लिख डालें | समस्या / समस्या के चयन का आधार / समस्या के प्रमुख कारण / समस्या हल करने हेतु आपकी कार्ययोजना / विभिन्न कार्यों के लिए समय सीमा / किए गए कार्य और उसके परिणाम / आपको इस पूरी प्रक्रिया में हुए अनुभव / सुझाव

तो इस तरह से आपने अपना क्रियात्मक अनुसन्धान करने का निर्णय ले लिया और एक वास्तविक समस्या पर सुधार कार्य करने का प्रयास किया |
यदि आपके क्षेत्र में पलायन या लंबी अनुपस्थिति एक समस्या नहीं है तो आप अन्य कोई वास्तविक समस्या लेकर प्रयास कर सकते हैं ? इस दिशा में आपके द्वारा किए जा रहे प्रयासों को हमारे साथ अवश्य शेयर करें |

एजेंडा # 3: माताओं के उन्मुखीकरण के बाद आए बदलाव-

हमने गत अंक में माताओं के उन्मुखीकरण के लिए कुछ सुझाव दिए थे | आपमें से बहुत से शिक्षकों ने अपनी अपनी शालाओं में आयोजित इस उन्मुखीकरण कार्यक्रम के छायाचित्र हमें भेजे हैं | माताओं के उन्मुखीकरण का यह दूसरा वर्ष है | हमने इस कार्यक्रम के माध्यम से शालाओं में आ रहे बदलाव के बारे में पूछा था | आपमें से कुछ से प्राप्त फीडबैक इस प्रकार है:

- **अभी तक केवल कुछ पिता ही कभी-कभार शाला आते थे | इस बार बहुत बड़ी संख्या में माताएं आने लगी हैं |**
- **बच्चों की उपस्थिति में सुधार हुआ है | शाला छोड़ चुके कुछ बच्चे भी शाला में आने लगे हैं |**
- **माताओं के शाला से जुड़ने से शिक्षकों की जवाबदेही बढी है | दोनों को अपनी-अपनी जिम्मेदारी का अहसास हो रहा है |**
- **घर पर बच्चों की समस्याओं की जानकारी शिक्षकों को एवं स्कूल में बच्चों की समस्याओं की जानकारी माताओं को मिलने लगी है | माताएं घर में बच्चों के पढाई के बारे में पूछताछ करने लगी हैं | गृह कार्य एवं कापी को पलट कर देखा जाता है | स्कूल में माताएं आकर खेलकूद का मजा भी लेती हैं |**
- **माताएं मध्याह्न भोजन का स्वाद लेने के साथ-साथ साफ़-सफाई, स्वच्छता पर भी ध्यान देने लगी हैं |**

फोटोग्राफ्स के बदले कुछ छोटी छोटी बदलाव की केस स्टडीज भेजना शुरू करें |

इन अपेक्षित बदलावों को नियमित रूप से बनाए रखने के लिए एक Thinking Institution के रूप में सोचना शुरू करें | कुछ सफल उपाय हमें भी बताएं | आपस में भी शेयर करें | माताओं को समय-समय पर शाला में आमंत्रित करने हेतु कुछ ठोस एजेंडा के बारे में भी सोचें | हर बार केवल माताओं के उन्मुखीकरण के नाम से न बुलाते हुए कुछ मुद्दों पर निर्णय लेने हेतु भी आमंत्रित करें |

पेड़ काटने आए हैं कुछ लोग मेरे गाँव में ... !!
अभी धूप बहुत तेज है कहकर बैठे हैं उसकी छाँव में ... !!

एजेंडा # 4: सोचने वाली संस्थाएं (thinking institutions):

चर्चा पत्र में दिए जा रहे सुझावों को शालाओं में लागू करने के अनेक उदाहरण मिलने लगे हैं | आप इस बात से भी सहमत होंगे कि धीरे-धीरे संकुल स्त्रोत केन्द्रों में आयोजित होने वाली बैठकों में अकादमिक मुद्दों पर चर्चाएँ होने लगी है और शिक्षकों में बदलाव भी दिखाई देने लगा है | चर्चा पत्र में हमने आपके पीएलसी को मिलकर कुछ फिल्मों को देखकर उन पर चर्चा करने का सुझाव दिया था | कुछ संकुलों ने सुझाए गए फिल्मों को देखकर उन पर चर्चा भी की |

हम सबका यह उद्देश्य होना चाहिए कि धीरे धीरे हमारे संकुल स्त्रोत केंद्र सोचने वाली संस्थाओं के रूप में उभरना शुरू करें | वे स्वयं मिलकर सोचे कि उनके संकुल की शालाओं को किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए, किस दिशा में कार्य करना चाहिए ताकि उनके बच्चों में सभी अपेक्षित दक्षताएं, गुण विकसित हो सकें |

ऐसी एक संस्था के रूप में विकसित होने हेतु आपको मिलकर सोचना शुरू करना होगा | अपने से एवं सामने वाले से प्रश्न भी पूछना होगा | किसी कार्य को करने से पूर्व उसके बारे में अच्छी तरह से सोचना पडेगा | किसी भी प्रशिक्षण में शामिल होने के बाद प्रशिक्षण बहुत अच्छा था, बहुत सीखें मिला, बहुत फायदा हुआ जैसे वाक्य बोलकर प्रशिक्षण आयोजनकर्ताओं को गुमराह करना छोड़ना होगा | प्रशिक्षण में बताई गयी कौन कौन सी बातें आप लागू कर सकेंगे, इन पर प्लान करना होगा | केवल कुछ दिन प्रशिक्षण लेकर साथियों से मिलकर जाना प्रशिक्षण का उद्देश्य नहीं है | बेहतरी के लिए सोचना शुरु करें | सहयोग दें | पीएलसी में सक्रिय सदस्य बनें |

सोचने वाली संस्थाओं के रूप में विकसित होने के लिए आपको दिए गए निर्देशों का पालन करने से आगे सोचना होगा | माताओं का उन्मुखीकरण करने के निर्देश के आधार पर इसका आयोजन कर उसके फोटोग्राफस भेजना बहुत अच्छा है | पर जब यह पूछ जाए कि इस गतिविधि से शालाओं में क्या सुधार हो रहा है, कुछ केस स्टडी शेयर करें, तो चुप्पी समझ में आती है | विभिन्न दिवस मात्र मना लेना, किसी ईवेंट का आयोजन सफलतापूर्वक कर लेना मात्र हम शिक्षकों के जीवन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए | हमें इसके आगे की सोच रखनी होगी | सोच-समझकर आगे बढ़ना होगा | सुधार के लिए मिलकर प्रयास करना होगा |

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, पोर्टा केबिन, आश्रम एवं छात्रावासों में शासन द्वारा बहुत राशि व्यय की जाती है | क्यों ?

ताकि सुविधावंचित समूह भी अन्य समूहों से समकक्ष आ सके, बेहतर कर सके और अपना जीवन स्तर ऊपर उठा सके |

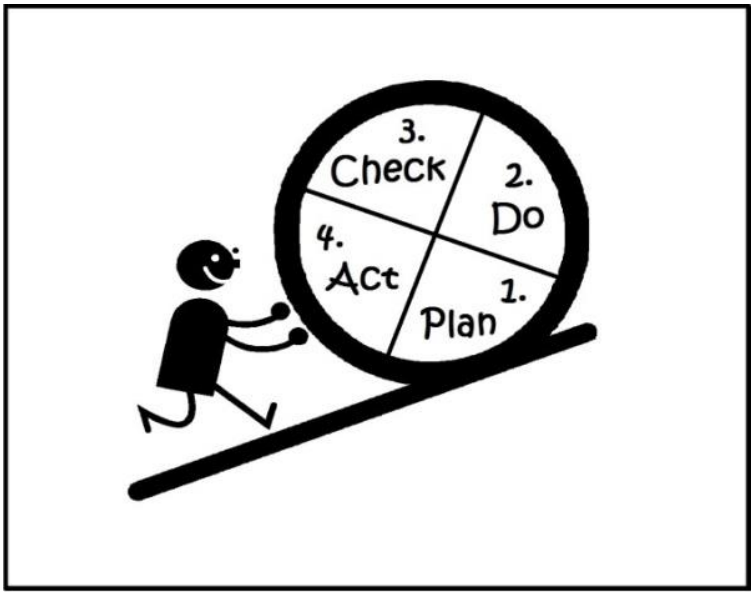

क्या इन बच्चों को चाही गयी सुविधाएं मिल पा रही है ?

क्या इनको गुणवत्तायुक्त शिक्षा मिल पा रही है ?

ये बच्चे पूरे समय आपने सानिध्य में रहते हैं | सभी सुविधाएं भी दिए जाने की व्यवस्था की गयी है | तो क्या इनका शैक्षिक स्तर अन्य बच्चों से बेहतर नहीं होना चाहिए ? क्या केवल भोजन खिला देना ही हमारी जिम्मेदारी है ? क्या हम इन सबके बचपन को खुशगवार कर पा रहे है और भविष्य में बारे में सोचकर उनके सुधार हेतु कुछ कर रहे हैं ? क्या इन बच्चों के साथ हम घर जैसा प्यार, संवेदनशील और अच्छा व्यवहार कर पा रहे हैं ? क्या इन बच्चों को इन छात्रावासों में क्वालिटी स्टडी टाइम मिल पा रहा है ? यदि ऐसा नहीं है तो ये गंभीर मुद्दा है | सोचें, समझे और सुधार के लिए सभी संबंधित कुछ संवेदनशीलता लाएं | चलो सब मिलकर हमारे राज्य में शिक्षा गुणवत्ता सुधार की दिशा में बेहतर कार्य करते हुए बेहतर परिणाम लाएं |

एजेंडा # 5: कक्षा के भीतर प्रबन्धन -

कक्षा में अलग-अलग पृष्ठभूमि, अलग-अलग क्षमता, अलग-अलग सीखने के वातावरण में किसी भी कक्षा को तीन सत्रों में बांटा जाना चाहिए-

- पूरी कक्षा के साथ कार्य (Working with whole Group)
- कक्षा में छोटे-छोटे समूह के साथ कार्य (Working with small groups)
- प्रत्येक बच्चे के लिए व्यक्तिगत अभ्यास के अवसर (Practice time for Individual Child)

पूरी कक्षा के साथ कार्य- शिक्षक व्दारा किसी कक्षा का प्रारंभ पूरी कक्षा के साथ कोई गतिविधि करते हुए की जानी चाहिए | इसके तहत कहानी, कविता, खेल या कुछ प्रश्न पूछकर उसके जवाब देने का अवसर दिया जा सकता है | इससे बच्चों को कक्षा में सुनने, समझने, समझ के विस्तार करने और अपनी सृजनशीलता को विकसित करने का पर्याप्त अवसर दिया जा सकता है | इस प्रक्रिया से बच्चों को उनके अपने पारिवारिक वातावरण में एक दूसरे से बात करते हुए भाषा विकास के पर्याप्त अवसर मिल सकते हैं |

छोटे-छोटे समूहों के साथ कार्य- यह कार्य कक्षा के भीतर या बाहर कहीं भी हो सकता है | बच्चे अलग-अलग दक्षताओं एवं कार्य की प्रकृति के अनुसार शिक्षक के निर्देश पर छोटे-छोटे समूह में बैठक एक दूसरे के सहयोग से काम कर आगे बढ़ते हैं | शिक्षक अलग-अलग समूह को काम करते हुए घूम-घूम कर देखते हैं और वहां उतना ही सहयोग करते हैं जहां जितना आवश्यक है | समूह में इस तरह काम करने के पश्चात सदस्यों व्दारा प्रस्तुतीकरण किया जाता है | इससे सीखे हुए चीजों की पुनरावृत्ति और पुष्टि हो जाती है |

बच्चों को व्यक्तिगत अभ्यास के अवसर – छोटे समूह में कार्य करने के बाद बच्चों को व्यक्तिगत रूप से सीखे हुए बातों को करने के अवसर लिखने, पढ़ने, बोलने या सवालों को हल करने का अवसर देकर किया जाता है | इस दौरान बच्चे समूह में या अलग-अलग भी बैठ सकते हैं | कोशिश यही होती है कि शिक्षक इस प्रक्रिया के माध्यम से यह जान सके कि किस बच्चों को क्या आता है और क्या सिखाए जाने की आवश्यकता है ?

किसी भी कालखंड में उपरोक्त तीनों प्रकार के कार्यों के लिए आवश्यकतानुसार अलग-अलग समय तय किया जा सकता है |
उपरोक्तानुसार तीनों अलग-अलग प्रकार के कार्यों से अलग-अलग दक्षताएं विकसित हो सकती हैं, जैसे -

WHOLE GROUP	*LEARNER GROUP*	*INDIVIDUAL PRACTICE TIME*
sharing	helping each other	observation
co operation	time management	understanding a concept
waiting for their turn	team work	handwriting
answering /responding	completing the task	independent writing
thinking	sharing	identification of areas of interest
observation	narrating	memory/recall , problem solving
listening	presentation	speaking
social skills	identification of areas of interest	usage of grammar
participate		identifying , self- assessment
questioning		reading (fluency)

एक संकुल समन्वयक के रूप में यह प्रयास करें कि आपके संकुल की सभी शालाओं में सभी शिक्षक अपनी प्रत्येक कक्षा में इन तीनों प्रकार के गतिविधियों को आवश्यक रूप से आयोजन करें |

एजेंडा # 6: सीखने की शैली के आधार पर उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों का उपयोग-

प्रत्येक बच्चे में किसी न किसी क्षेत्र में प्रतिभा होती है और हर बच्चे के सीखने का तरीका अलग-अलग होता है | यदि हम उनके सीखने के तरीकों के अनुरूप सिखाने के तरीकों का उपयोग करें तो सीखना और सिखाना बहुत आसान हो जाता है | आपने स्वयं अनुभव किया होगा कि आपको किसी एक तरीके से सीखने में आसानी होती है चाहे वो चित्र देखकर सीखना हो, सुनकर सीखना हो या कुछ करके सीखना हो |

बहु-प्रतिभा के प्रकार-

1. दृश्य संबंधी/ स्थानिक प्रतिभा (Visual/ Spatial)

दृश्य को समझने की क्षमता। ऐसे सीखने वाले लोग चित्रों के रूप में सोचते हैं एवं जानकारी को रखने के लिए इन्हें स्पष्ट मानसिक प्रतिबिम्बों की आवश्यकता होती है। उन्हें नक्शों, चार्ट, चित्रों, वीडियो तथा फिल्में देखने में आनंद आता है। उनके कौशल में शामिल है: पहेलियाँ बनाना, पढ़ना, लिखना, चार्ट एवं ग्राफों को समझना, अच्छा दिशाबोध, स्केच बनाना, दृष्टि संबंधी रूपकालंकार तथा उपमा बनाना (संभवतः दृष्टि संबन्धी कला की माध्यम से), प्रतिबिम्बों में हेर-फेर, निर्माण, दृढ करना, वास्तविक वस्तुओं की डिजाइन, दृष्टि संबन्धी प्रतिबिम्बों व्याख्या करना.

2. शाब्दिक/बहुभाषा प्रतिभा (Verbal/ linguistic)

शब्दों तथा भाषा के उपयोग की क्षमता। ऐसे सीखने वाले लोगों में अंकेक्षण कौशल अत्यंत विकसित होता है तथा सामान्यतः ये शिष्ट वक्ता होते हैं। ये चित्रों की बजाय शब्दों में सोचते हैं ।उनके कौशल में शामिल है: सुनना, बोलना, लिखना, कहानी कहना, विस्तार से समझाना, शिक्षण, हास्य का उपयोग, शब्दों के विन्यास एवं अर्थ की समझ, जानकारी याद रखना, किसी को अपने विचार मनवाना, भाषा के उपयोग का विश्लेषण।

3. तार्किक/गणितीय प्रतिभा (Logical/ Mathematical)

वजह, तर्क एवं संख्याओं के उपयोग की क्षमता। ऐसे सीखने वाले तार्किक एवं संख्यागत तरीके से संकल्पना कर विभिन्न जानकारियों के बीच सम्बन्ध बैठाते हैं। अपने आस-पास की दुनिया के प्रति हमेशा जिज्ञासु। ऐसे सीखने वाले कई प्रश्न पूछते हैं एवं प्रयोग करना पसंद करते हैं उनके कौशल में शामिल है: समस्याएं हल करना, जानकारी को वर्गों एवं श्रेणी में बांटना, परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गूढ़ सिद्धांतों के साथ कार्य करना, कारणों की लम्बी कड़ी को लेकर अनुक्रम बनाना, नियंत्रित प्रयोग करना, प्राकृतिक घटनाओं के बारे में प्रश्न एवं विस्मय करना, जटिल गणितीय गणनाएं करना, ज्यामितीय आकारों के साथ कार्य करना।

4. दैहिक/इन्द्रियगत प्रतिभा (Bodily/ kinaesthetic)

शारीरिक हलचल एवं वस्तुओं को दक्षतापूर्वक पकड़ने की क्षमता। ऐसे सीखने वाले अपने आप को हलचल के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इन्हें संतुलन एवं हाथ से आँख के समन्वय का अच्छा बोध होता है (उदाहरण के लिए गेंद खेलना, बैलेंसिंग बीम्स)। अपने आसपास की जगह के संपर्क में ये जानकारी को याद एवं प्रसंस्कृत करने में सक्षम होते हैं। उनके कौशल में शामिल है: नृत्य, शारीरिक समन्वय, खेलकूद, स्वयं द्वारा प्रयोग, शारीरिक भाषा का उपयोग, कला, अभिनय, हाथों का उपयोग कर रचना, शरीर के माध्यम से मन के भावों को व्यक्त करना

5. सांगीतिक/तालग्राही प्रतिभा (Musical)

संगीत के निर्माण एवं प्रशंसा की क्षमता। संगीत में रुचि रखने वाले, ऐसे विद्यार्थी ध्वनि, ताल एवं पैटर्न के रूप में सोचते हैं। वे संगीत में जो भी सुनते हैं, उसपर तुंरत अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, चाहे वह प्रशंसा हो या आलोचना। इनमें से कई विद्यार्थी पर्यावरणीय ध्वनि के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं (उदाहरण के लिए झींगुर, घंटियाँ, नल से टपकता पानी)। उनके कौशल में शामिल है: गाना, सीटी बजाना, वाद्य यन्त्र बजाना, स्वरलहरी पहचानना, संगीत रचना, मेलोडी याद रखना, ताल एवं संगीत का ढांचा याद रखना

6. अंतर व्यक्तित्व प्रतिभा (Inter-personal)

अन्यों को समझने एवं सम्बन्ध स्थापित करने की प्रतिभा। ये विद्यार्थी बातों को अन्य लोगों के नज़रिए से देखते हैं, यह समझने के लिए की वे क्या सोच रहे हैं और कैसा महसूस कर रहे हैं। इनमें अक्सर भावनाओं, इरादों एवं उत्प्रेरण को महसूस करने की अलौकिक शक्ति होती है। वे बहुत अच्छे समन्वयक होते हैं, हालांकि कभी-कभी वे गड़बड़ का सहारा भी लेते हैं। आमतौर पर वे समूह में शान्ति बनाए रखने की चेष्टा करते हैं एवं सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं। वे अन्यों से संवाद आरम्भ करने के लिए वाक् (जैसे कि बोलना) एवं अवाक (जैसे कि नज़रें मिलाना, शारीरिक भाषा) दोनों भाषाओं का उपयोग करते हैं।
उनके कौशल में शामिल है: दूसरे लोगों के दृष्टिकोण से चीजों को देखना (दोहरे परिप्रेक्ष्य), सुनना, समानुभूति का उपयोग करते हुए, अन्य लोगों के मूड और भावनाओं को समझना, परामर्श, समूहों के साथ सहयोग, लोगों की मनोदशा, प्रोत्साहन एवं इरादों पर ध्यान देना, मौखिक रूप से और गैर संचार-मौखिक रूप से संवाद करना, विश्वास का निर्माण, शांतिपूर्ण तरीके से संघर्ष सुलझाना, अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करना।

7. अंतःव्यक्तित्व प्रतिभा (Intra-personal)

स्वयं-विचार करने एवं किसी की अन्तःस्थिति को समझने की क्षमता। ये शिक्षार्थी उनकी अंतर्भावनाओं, सपनों, दूसरों के साथ संबंधों, एवं शक्तियों तथा कमजोरियों को समझने की कोशिश करते हैं। उनके कौशल में शामिल है: स्वयं की शक्तियां एवं कमजोरियां पहचानना, स्वयं विचार प्रकट करना एवं उनका विश्लेषण करना, अंदरूनी भावनाओं के प्रति जागरूकता, इच्छाएं एवं सपने, सोच प्रक्रिया का आकलन, स्वयं के साथ तर्क-वितर्क, दूसरों के साथ स्वयं की भूमिका की समझ

स्कूल में बहु-प्रतिभा सिद्धान्त अपनाने के लाभ

- आप छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं प्रतिभाओं के आधार पर उन्हें सीखने के बेहतर अवसर प्रदान करेंगे। छात्र अधिक क्रियाशील, समर्पित शिक्षार्थी बन जाते हैं।
- पालकों तथा समुदाय की रूचि आपके स्कूल में बढ़ सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि छात्र पैनलों तथा श्रोताओं के समक्ष अपने कार्य का प्रदर्शन करते हैं। शिष्य की तरह सीखने की गतिविधियाँ समुदाय के सदस्यों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल कर देती है।
- छात्र अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर सकेंगे एवं सबके साथ बाँट सकेंगे। शक्तियों का निर्माण, छात्र को एक "विशेषज्ञ" बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह अंततः स्वाभिमान के रूप में परिणत हो सकता है।
- जब आप "समझने के लिए पढाते हैं" तो आपके छात्र सकारात्मक शिक्षकीय अनुभव तथा जीवन में समस्याओं के हल के लिए क्षमता इकट्ठी कर लेते हैं।

कक्षा में उपयोग

- किसी एक प्रकरण को कक्षा में सिखाने के लिए किन किन पद्धतियों का उपयोग हो सकता है, देखें |
- कोशिश करें कि अधिकतम पद्धतियों का उपयोग हो जाए ताकि अलग-अलग तरीकों से सीख सकने वाले बच्चों को इनका लाभ मिल सके | जैसे गिनती सिखाने हेतु गीत, कंकड़, चित्र, संख्या सभी का बारी- बारी से उपयोग कर बच्चों का सीखना आसान किया जा सकता है | बच्चों की रूचि के अनुरूप उनके लिए पद्धतियाँ चुनकर उपयोग में लाएं |

एजेंडा # 7: धीमी गति से सीखने वाले बच्चे-

बच्चों के आकलन करते समय आप देखते हैं कि कक्षा में कुछ बच्चों को कुछ भी नहीं आता ? आप उपचारात्मक शिक्षण कर उनमें सुधार लाने का प्रयास करते हैं | फिर भी वे ठीक से सीख नहीं पाते | आप यह पाते हैं कि इनमे कोई विशेष विकलांगता भी नहीं है जिससे इनका सीखना प्रभावित हो रहा है | अंत में आप हारकर इन्हें “गधा, मूर्ख, लापरवाह, मंदबुद्धि” और न जाने क्या क्या लेबल लगाना शुरु कर देते हैं | प्रायः सभी

कक्षाओं में ऐसे कुछ बच्चे होते हैं |

ज़रा सोचे कि आपकी कक्षा में इस प्रकार के बच्चे कौन-कौन से हैं ? क्या इन्हें भी अन्य बच्चों जैसे सिखाया नहीं जा सकता ?

इन्हें सिखाने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती | बस आपको प्रारंभ में ही ऐसे बच्चों की समस्याओं को पहचान कर सही उपाय करते हुए इन पर विशेष ध्यान एवं संवेदनशीलता दिखाते हुए उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सुधार करना होगा | ऐसे बच्चों की पहचान निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर की जा सकती है:

- ऐसे बालक प्रायः मूडी एवं चिंतित दिखाई देते हैं एवं अनेक व्यावाहारित्क समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं |
- ये विभिन्न भाषाई कौशलों में दक्षता प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं | ध्यान या एकाग्रता में भी परेशानी होती है |
- ऐसे बच्चों में अत्यधिक व्यग्रता तथा अनावश्यक उत्तेजना देखने को मिलती है | सूचनाओं को व्यवस्थित करने में कठिनाई |
- इनमे भाई-बहनों एवं सहपाठियों से समायोजन की समस्या होती है |

ऐसे समस्याओं के निदान हेतु कुछ सुझाव:

- सत्र के प्रारंभ में ही ऐसे बच्चों की पहचान कर अन्य शिक्षकों के साथ उनकी जानकारी साझा करें |
- यदि बच्चे को सुनने या देखने में तकलीफ का पता चले तो उसे सामने बिठाएं |
- ऐसे बच्चों को कभी भी कमजोर या कोइ लेबल न लगाएं, इससे स्थिति और बिगड़ेगी | इनके साथ अपनेपन का व्यवहार रखें |
- यदि बच्चे को लिखित कार्य करने में परेशानी हो तो उसे मौखिक प्रश्नों से क्षतिपूर्ति करने का प्रयास करें |
- छोटे-छोटे टेस्ट लेकर मूल्यांकन करें और धीरे-धीरे कठिनाइयों का स्तर बढाएं | हमेशा प्रोत्साहित करें |
- माता-पिता से संपर्क कर बच्चों के लिए समुचित सामाजिक वातावरण तैयार करने में सहयोग देना |
  अपने अपने अनुभवों के आधार पर ऐसे बच्चों की समस्याओं को दूर करने हेतु उपाय सुझाएँ |
  कुछ बच्चों की केस स्टडी तैयार कर अपने अनुभव साझा करें |
  इस संबध में उपलब्ध साहित्य एवं इंटरनेट से जानकारी एकत्रित कर अपने साथियों के साथ साझा करें |

एजेंडा # 8: राष्ट्रीय आविष्कार अभियान

सभी जिलों को विज्ञान में गतिविधि सह पठन कार्ड (Activity cum Reading Cards or Do it Yourself Cards) बनाने हेतु कार्यशालाओं के आयोजन हेतु बजट दिया गया है | यदि आपको इन क्षेत्रों में रूचि है और आपके पास कुछ आइडियाज अथवा सामग्री तैयार है तो अपने जिले में सर्व शिक्षा अभियान कार्यालय में संपर्क करें या सीधे व्हाटसएप्प पर हमें भी भेजें –

- हमारे आसपास सामाजिक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों में निहित विज्ञान को खोजकर सामने लाना (सीधे बैठकर पढ़ने क्यों कहा जाता है ? घरों में आँगन में गोबर क्यों लीपा जाता है ? आँगन में तुलसी का क्या महत्व है ? उपवास क्यों रखते हैं ?...)
- हमारे घर या आसपास आसानी से उपलब्ध होने वाले वस्तुओं से कुछ आसान प्रयोग करने का विवरण दर्शाते कार्ड्स
- कबाड़ से जुगाड़ के माध्यम से विज्ञान को रोचक बनाने के कुछ तरीके
- प्राचीन युग से अपनाए जा रहे कुछ नुस्खे (जैसे आदिवासी क्षेत्रों में मौसम की भविष्यवाणी जानने के तरीके.....)
- स्वास्थ्य की देखभाल के लिए कुछ घरेलू नुस्खे एवं ध्यान देने योग्य कुछ बातें

- अब तक इग्नाईट अवार्ड में सुझाए गए कुछ नवाचारी उपायों का विवरण
- पाठ्य-पुस्तकों में उपलब्ध विभिन्न प्रकरणों को आसानी से समझाए जाने हेतु कुछ गतिविधियाँ
- गणित एवं विज्ञान शिक्षण हेतु विभिन्न सहायक सामग्री बनाने के तरीके
- मोबाइल के माध्यम से खरीददारी हेतु उपलब्ध विभिन्न तरीके एवं प्रक्रिया

इसके अलावा और भी अन्य मुद्दों पर सभी जिलों को प्रिंट करने हेतु कार्ड्स तैयार कर आपस में शेयर किया जाना है | जिलों में इस हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना है | इच्छुक प्रतिभागी तैयार सामग्री के साथ अपने जिले में संपर्क करें |

एजेंडा # 9: माह दिसंबर के लिए गतिविधियाँ

गणित सप्ताह का आयोजन:

माह दिसंबर में प्रतिवर्ष की भाँति गणित सप्ताह का आयोजन किया जाना है | इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में गणित विषय में रूचि विकसित करते हुए भय दूर करना है | गत वर्ष इसके लिए सर्कुलर जारी किए गए थे और चर्चा पत्र में भी सुझाव दिए गए थे | इन सबका अवलोकन करें और अपने संकुल में गणित सप्ताह के आयोजन हेतु योजना बनाएं | ध्यान रखें कि अब आप सोचने वाली संस्था के रूप में कार्य करते हुए केवल दिवस का आयोजन न करते हुए इसके माध्यम से गणित विषय में रूचि एवं दक्षता विकसित करने हेतु ठोस कार्यक्रम बनाएं |

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी व्दारा शिक्षक क्षमता विकास:

सभी जिले एवं विकासखंड अपने अपने क्षेत्र में कार्यरत सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सामग्री निर्माण की जिम्मेदारी देंते हुए उनसे पाठ्य-सामग्री को बेहतर एवं आसान तरीकों से समझाए जाने हेतु प्रशिक्षण - सामग्री एवं स्त्रोत व्यक्ति तैयार करें | प्रशिक्षण के दौरान फोकस शालाओं के ऐसे शिक्षक जिनकी कक्षाएं फेल हुई हैं, से पाठ्य-पुस्तकों में दिए गए सभी अभ्यास स्वयं करने एवं विभिन्न प्रकरणों को कैसे कक्षा में प्रस्तुत करेंगे, उन पर शिक्षण योजना अवश्य तैयार करवाएं |

प्राथमिक स्तर पर कुल 25122 कक्षाओं का निरीक्षण किया गया था जिसमे से 10611 कक्षाएं निर्धारित स्तर पर खरी नहीं उतरी | उच्च प्राथमिक स्तर पर 9672 कक्षाओं का निरीक्षण किया गया जिसमे से 4899 कक्षाएं खरी नहीं पाई गयी | उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी में 1175 कक्षाएं, हिन्दी में 411, गणित में 1050, विज्ञान में 924 और आश्चर्यजनक रूप से सामाजिक अध्ययन में सबसे अधिक कुल 1339 कक्षाएं अपेक्षित स्तर पर खरी नहीं उतरी |

ऐसी स्थितियां फोकस शालाओं के अतिरिक्त अन्य शालाओं में भी हो सकती है | उनमे आप अपने स्तर पर क्या सुधार कार्य कर रहे हैं | डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अगले चरण में प्रत्येक बच्चे का व्यक्तिगत आकलन होगा |

व्हाट्सएप्प समूह में शामिल होना:

हमने राज्य के पेडागोजी शाखा से सीधे विकासखंडों को जोड़ने एवं जिलों को अपने अपने जिलों के समस्त संकुलों एवं सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी से जुड़ने की व्यवस्था की है | इस प्रकार एक बहुत बड़ा समूह अगले माह तक इसमें जुड़ सकेगा | इतने बड़े समूह के साथ कार्य करने हेतु कुछ नियम तय करने होंगे | इन्हें समूह के सदस्यों के साथ साझा किया जाएगा | कुछ नियम इस प्रकार हैं- इस समूह में केवल शिक्षा गुणवत्ता पर पोस्ट डाले जाएँ | गुड मार्निंग, गुड नाईट एवं फूल जैसे चित्र भेजकर अपना एवं दूसरों का समय व्यर्थ न गंवाए | किसी मुद्दे पर एक दो फोटो से आधिक न भेजे जाएं और उसके बदले उनका संक्षिप्त विवरण एवं केस स्टडी को

प्राथमिकता दी जाए | यदि आपका समूह केवल विशुद्ध अकादमिक मुद्दों पर जानकारी शेयर करते हैं तो आप अपने पीएलसी से 9425507257 – डॉ. एम. सुधीश, राज्य परियोजना कार्यालय को भी जोड़ें |

मोबाइल से खरीददारी करने हेतु शिक्षकों का क्षमता विकास:

अपने आसपास शिक्षकों का एक प्रोफेशनल समूह जो मोबाइल शोपिंग में दक्ष हो, बिना इंटरनेट पैसे कैसे ट्रांसफर कर सकते हैं , और इस क्षेत्र में कौन-कौन से उपाय उपलब्ध हैं, पर शोध कार्य कर इस स्त्रोत दल के माध्यम से अपने संकुल में शिक्षकों को इस नई तकनीक की जानकारी देकर रजिस्ट्रेशन करवाएं | शिक्षकों को अपने परिवार एवं आसपास अन्य सदस्यों को भी इस तकनीक को सीखने हेतु प्रेरित करें | कितनी संख्या में शिक्षकों ने इसे सीख लिया है, अवश्य अवगत करवाएं | स्वयं सीखकर उपयोग करने के बाद इस तकनीक को पालकों के साथ भी शेयर करते हुए सिखाया जा सकता है |

आगामी अकादमिक निरीक्षण के पूर्व तैयारियाँ:

अपने संकुल की शालाओं में माह जनवरी में होने वाले आगामी अकादमिक निरीक्षण के पूर्व सभी आवश्यक तैयारयाँ कर लें | यह देखें कि शालावार पिछली कक्षाओं के क्या-क्या परिणाम रहे और परिणामों में कमी के क्या-क्या कारण थे ? कौन कौन सी कक्षाएं अपेक्षाओं में खरी नहीं उतरी और इनमे किन किन क्षेत्रों में आवश्यक सुधार किया जाना है | प्रथम अकादमिक निरीक्षण के उपरान्त शालाओं में सुधार हेतु क्या-क्या प्रयास अब तक किए गए हैं ? बच्चों की उपस्थिति सुधारने हेतु क्या-क्या किया जाना चाहिए और यदि बच्चों को सब कुछ आते हुए भी बाहरी व्यक्ति के समक्ष नहीं बोल पा रहे हैं तो ऐसी स्थति में क्या किया जाना चाहिए ?

चलते चलते

किसी ने एक बार पूछा , "हम कार में ब्रेक क्यों रखते हैं ?"
बहुत से उत्तर आए जैसे- "कार रोकने के लिए", "स्पीड कम करने के लिए", "दुर्घटना से बचने के लिए" आदि..आदि |
इनमे से जो उत्तर सबसे अच्छा लगा वो था, "ताकि हम तेजी से गाडी चला सके |"
इस उत्तर पर ज़रा ध्यान दें | यही उत्तर सही है पर शायद ही हम इस दिशा में सोच पाते हैं |
गाडी में ब्रेक होने की वजह से ही हम अपना एक्सीलेटर तेज कर सकते हैं, जोर से दबा सकते हैं, गाडी तेज चलाने की हिम्मत कर सकते हैं और उन जगहों पर पहुच सकते हैं जहां पहुँचना चाहते हैं |

जीवन के विभिन्न अवसरों पर हमें हमारे माता-पिता, भाई-बन्धु, शिक्षक, दोस्त, अधिकारी, सहयोगी हमसे विभिन्न मुद्दों पर प्रश्न करते हैं | लेकिन याद रखें आह आप जो भी हैं उसमे इन सबका बहुत योगदान होता है | अपने जीवन में आने वाले इन ब्रेक्स की प्रशंसा करना शुरू करें |

आज एक नई सीख मिली जब अंगूर खरीदने बाजार गया |
पूछा "क्या भाव है ?" बोला: "80 रुपए किलो |"
पास ही कुछ अलग-अलग टूटे हुए अंगूरों के दाने पड़े थे |
मैंने पूछा: "क्या भाव है इनका ?" वो बोला: "30 रूपए किलो |"
मैंने पूछा: "इतने कम दाम क्यों .. ?"
वो बोला: "साहब, हैं तो ये भी बहुत बढ़िया..... !!" लेकिन ... अपने गुच्छे से टूट गए हैं |"
मैं समझ गया कि .... संगठन.... समाज और परिवार से अलग होने पर हमारी कीमत ..... आधे से कम रह जाती है |
कृपया अपनों से हमेशा जुड़े रहो |

एजेंडा # 10: चित्र पर चर्चा- गड़बड़ी कहाँ हो रही है ?

स्कूली शिक्षा में बच्चों की गुणवत्ता सुधारने बहुत से प्रयास हो रहे हैं | कई बार किए जा रहे विभिन्न प्रयास समस्या के हल के लिए सही नहीं हैं | जैसे चित्र में कील ठोकने के लिए स्क्रू-ड्राइवर की नहीं वरन हथौड़े की जरूरत है | अपने संकुल में व्याप्त विभिन्न समस्याओं की जानकारी लेते हुए प्रत्येक समस्या के लिए स्थानीय तौर पर सबसे सही, सबसे सटीक, सबसे बढ़िया, सबसे प्रभावी उपाय क्या हो सकते हैं, इन पर चर्चा करवाएं और इन्हें लागू किए जाने हेतु उचित निर्णय लेते हुए अपने अपने शाला विकास योजना में शामिल करते हुए उनका क्रियान्वयन करवाएं |

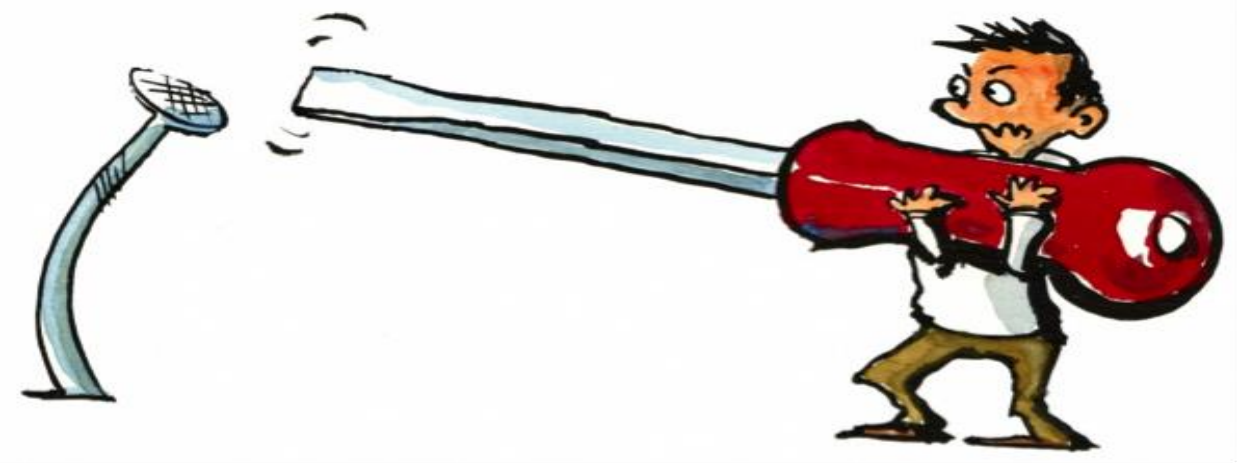

हम अक्सर शिकायत करते हैं कि हम दिन और रात खूब मेहनत करते हैं पर हमारे बच्चों में अपेक्षित सुधार नही होता | क्या करें , उनकी पिछली कक्षा से वे कुछ सीख कर नहीं आए हैं ! उनके माता-पिता अपने बच्चों की पढाई पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देते हैं ! हमारे यहाँ शिक्षकों की कमी है ! और भी न जाने क्या क्या !

इन परिस्थितियों के बावजूद हम कैसे योजना बनाकर स्मार्ट तरीके से काम करें कि कम मेहनत से बेहतर परिणाम सामने आएं |

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन
रायपुर, छत्तीसगढ़- mis.head@gmail.com